॥ नमः परमात्मने ॥

राधेश्यामकीर्त्तन

नाटक की चाल के गानों में, राग रागनियों में,

ईश्वरभक्ति, चेतावनी, उपदेशक,

भजनों की पुस्तक

जिसको

बरेली निवासी

प० राधेश्याम कथावाचक ने

रचकर प्रकाशित किया.

प्रथमबार] सन १९१३ [मूल्य [illegible])

पुस्तकरचयिता

पं॰ राधेश्याम कथावाचक हारमोनियम बरेली.

I N Press Moradabad

श्रीगणेशाय नमः ॥

अभिनन्दन पत्रम्

इह खलु बरेलीनगरनिवासिना चौरासियाकुललब्धजन्मना कथावाचकश्रीराधेश्यामशर्मणा समुपगीतां भगवद्गुणगाथां न्यशमाम साभिनिवेशम् । समितिमनोरञ्जकस्यास्य नवनवपद्-निर्माणनैपुण्यं वाद्यवादनपाटवं भावोद्बोधकञ्च कीर्तनकौशल-मेकत्र निरीक्षमाणाः समतुषामसमाधिकमिति प्रसन्नमनसः प्रयच्छामो वयमस्मै "कीर्तनकलानिधि" पदवीमिति ॥

श्रावणकृष्ण १२
सं० १९८९
जयपुरम्

संस्कृतरत्नाकरसमितिसदस्याः।
श्रीमधुसूदनशर्मशास्त्री
विद्यावाचस्पतिः
संस्कृतरत्नाकरसमितेरध्यक्षः

* नमः परमात्मने *

नाटक की चालके गानो मे, राग रागनियो मे,

ईश्वरभक्ति, चेतावनी, उपदेशक,

भजनोंकी पुस्तक

रचयिता और प्रकाशक

प० राधेश्याम कथावाचक

बरेली.

प्रिन्टर

लक्ष्मीनारायण "लक्ष्मीनारायण" प्रेस,

मुरादाबाद.

प्रार्थना

हे अशरणशरण !

आप जगत्‌पिता हैं, जगत्‌रचयिता हैं, उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय के कारणरूप, पालक, पोषक, संहारक हैं।

हम आपके नादान बालक हैं, आपही ने सुलाया था, आपही ने जगाया है, हमारे सब कुछ आपही हैं, हमभी आपही के हैं, आपही की कृपा होने से आपका ध्यान स्मरण करसकते हैं। अस्तु!

हे इष्टदेव! सर्वदा, सर्वत्र, सर्वकाल, अशुद्धआचरणों में घृणा दिलाते हुये हमारी रक्षा कीजिये। और शुद्ध सत्यमार्ग दिखलाते हुये, हमारी बुद्धियों को निर्मल करदीजिये, सदा आपही का कीर्त्तन किया करें, शुद्धहृदय से आपके गुणगानरूपी अमृत का पान करते हुये, जीवन व्यतीत हो। और क्या कहैं नाथ—

"काहू के बल बाहु को, काहू के बल दाम।
एक तुम्हारे बल सदा, निर्भय "राधेश्याम"॥

समर्पण

श्रीमान् वैश्यवंशभूषण, धर्मावतार, राजा ललिताप्रसादजी बहादुर, रईसआज़म पीलीभीत, के करकमलों में-

मान्यवर !

प्राय: बाल्यावस्था से ही हिंडोले जन्माष्टमी उत्सवों पर श्रीमान् इस ब्राह्मणकुमारकी 'गायनवाटिका" को "कृपाजल' देते रहे।

आज वही वाटिका हरीभरी तरुण होकर फूलने खिलने लगी है-अस्तु।

फुलवारी के मनोहर मनोहर फूलों से गूंथकर यह छोटीसी माला आपको समर्पित है। फूलों की सुगन्धि आपके योग्य है या नहीं, यह मैं नहीं जानता। न इस विषय में मुझे विशेष लिखनेकी आवश्यकता है—

विनीत-

राधेश्याम

भूमिका

पाठक !

पुस्तक बनाते और पढ़ते हैं, ज्ञानके लिये। कथा भागवत कहते और श्रवण करते हैं, प्रेम और सुधार के लिये गायन गाते और सुनते हैं, मनके रोकने और आनन्दके लिये।

वर्त्तमानकाल में-यदि आप पक्षपात छोड़के देखें, तो पुस्तकें शायद कुछ मिलजायँ, किन्तु ऊपर लिखे जैसे कथावाचक और गायक इने गिने ही दिखलाई देवेंगे ॥

नहीं तो-पुस्तकों में तो "झूठे गन्दे किस्सोंकी" "गुलो बुलबुलके झगडोंकी" तादाद बढ़रही है। और कथावाचकों में "चुन्नटदार दुपट्टा डालकर छरेंदार तिलक लगाकर-मज़ेदार हाव भाव करके पुरुषों को रिझानेका, स्त्रियों को लुभाने का, और चुहचुहाते लतीफ़े सुना सुनाकर "धनोपार्जन" करनेका चक्र चल रहा है।

पुरुषों को उपदेश देना नहीं जानते, स्त्रियोंको माता बहिन नहीं समझते। "हम व्यासगद्दी पर बैठे हैं" इस बातका विचार नहीं करते।

मेरी इस "खरी" आलोचना में, मेरे कथावाचक भाई "चिढ़ें" नहीं। कारण-बादल गर्मी करके ठण्डे जल बरसाता है। मृदंग खिंचकर और चोट खाकर आनंद देता है।

जिनमें उपरोक्त बातें हैं। और जो हमारी कथा और व्यासगद्दी के नामको कलंकित कर रहे हैं। उन्हींके सुधार के लिये, उन्हींको जगाने के लिये ऐसा लिख रहा हूँ।

नहीं तो जो सच्चे व्यास हैं, सच्चे कथावाचक हैं, सच्चे उपदेशक हैं वो मेरे पूज्य, मेरे माननीय, मेरे शिरोधार्य, मेरे धर्मगुरु हैं।

"मुश्क खुद बिबोयद न कि अत्तार गोयद"

अब रहे "गायक"। सो इनमें भी "सय्यांकी सिजियां" 'कर. बटियां लेने न देय'। ऐसे २ गानोंका घोर प्रचार है। इसमें गायक

के अलावा सुनने वालों का भी दोष है-नहीं तो, शिव डमरू में निवास करनेवाली, देवऋषि नारद द्वारा धारणकी हुई, मीरावाइ के प्रेम से सींचीहुई, स्वामी हरिदास, वैजूवावरे, तानसेन प्रभृति महानुभावों द्वारा शोभापाई हुई 'गान्धर्ववेद' नामधारी-विद्याकी यह दीन हीन दशा न होती।

आजकल गानेके कई रूप होरहे हैं। एकतो धुर्पद धम्माल आदि तालों का गाना, दूसरा तान टप्पोंकी चलत फिरत तीसरे सुरीली आवाज़ में ग़ज़ल ठुमरी !

कमी है तो वोही एक बात की—सबसे बड़ी बातकी-अर्थात् 'शुद्धराग रागनियों द्वारा' उपदेशक-आत्मदर्शक गाने न गाये जाना!

अबभी कहीं कहीं-कभी कभी-"शुद्ध राग रागनी द्वारा" जब सुनते हैं "जगत् को बतलादो सत ज्ञान" तो ख्याल आजाता है।

'समथिंग इज़ बेटर दैन नाथिंग'

मुझे बाल्यावस्थासेही, मेरे पूज्य पिताजी (श्रीपं० बांकेलालजी) ने, गायन हारमोनियम और कथाका अभ्यास कराया था। सुन कर ताज्जुब होगा-कि मैंने अपनी नौवर्षकी अवस्था में-अच्छी तरह हारमोनियम बाजा बजाकर, ताल सुरसे श्रीगोस्वामि तुलसीदासकी रामायण बांची !!

ज्यों ज्यों शौक़ बढता रहा। मैं पिताजी के साथ प्रदेश पर्यटन करता रहा, साथ साथ हिन्दी उर्दू अङ्गरेज़ी आदि देशभाषाओं का पठनभी होता रहा। कहां कहां गया, क्या क्या किया, यह सब नहीं लिखना है—इसके लिये तो एक "स्वतन्त्रजीवनी" चाहिये।

जिन दिनों मेरी बारहवर्षकी अवस्था थी। उन्हीं दिनों मेरे पिता के सद्गुरु श्री १०८ स्वामी रामदासजी * का काशी से बरेली आगमन हुआ।

मैं नित्य पिताजीके साथ, स्वामीजीके दर्शनों को जाने लगा

*यह बालब्रह्मचारी आत्मदर्शक परमहंस थे। १२० वर्षकी अवस्थामें शरीर छोड़कर निजस्वरूप में लीन होये हैं। इनकी समाधिभी "बरेली" के समीपही "चुनोली" नामक ग्राममें है जहां अबभी प्रति शरदपूर्णिमा को मेला होता है।

और सत्संग, आत्मविचार, रामकथा सुनने लगा। उसी दर्बारसे मुझे "तुकबन्दी" का शौक़ लगा। नये नये पद बनाकर ले जाया करताथा, सुनकर, स्वामीजी और पिताजी मेरी बालबुद्धीपर प्रसन्न होते थे। और अवस्था दोषसे जो अशुद्धियां रहजाती थीं उन्हें सुधारके समझा देते थे।

आज उसी दर्बारके कई पद इस पुस्तकमें दर्ज कर रहाहूं शेष सब नवीन विचार के हैं--

समय पाय स्वामीजीका शरीर पात हुआ। और मैं, "कृष्ण प्रेम"में झुका। उन्हीं दिनों मित्रमण्डलीकी कृपासे मुझे नाटक देखने का शौक़ लग गया (जो अभीतक है) तभीसे प्रण किया इन विषयोंके भी गानोंकी चालपर हरि सम्बन्धी गाने बनाऊंगा। और आजसे अपनी कथामें समाजमें कभी कोई विषयला भद्दा गाना नहीं गाऊंगा।

उन्हीं दिनों नाटककी तर्ज़के गानोंमें "राधेश्यामविलास" नामक* कृष्णभक्तिकी पुस्तक बनाई--"समयानुसार छपीभी" धीरे धीरे मेरी अवस्था बढ़ी। फ़ैशन एबिल बना। उपन्यास समाचार-पत्रोंमें अनुराग हुआ। देशोन्नति के भजनभी बनाये। किन्तु यह ख्याल अत्यंत शीघ्र छूटगया। इस ख्वतके हटतेही-रामचरित्रको छन्दों (गानों) में बनाना प्रारम्भ किया।

क्रमशः अब रामभक्ति बढ़ी। क्रमशः श्रोताओंको यह रामायणभी रुचिकर हुई, क्रमशः सीताहरण, सुग्रीवमिताई, भिलनी की भक्ति आदि पुस्तकें छपीं। नतीजा यह कि इस रामकथारूपी महासागरमें अभीतक तैर रहाहूं पार लगाना रामजी के और गुरुदेवके हाथ है।

इसी दरम्यानमें रामायणके साथही साथ हक़ानी और सुधारक गानोंसे ज्यादा शौक़ बढ़गया। इस शौक़को ज्यादा बढ़ानेवाले मेरे सच्चे मित्र, सच्चे शुभचिन्तक, मुजफ्फरनगरके श्रीमान् बाबू

* राधेश्यामविलासमें जो सुधार और चेतावनी के गाने छप गये थे वो भी इसमें से निकालकर विशेष शुद्ध करके इसमें दर्ज कर दिये हैं। कारण, राधेश्यामविलासमें राधेश्याम सम्बन्धी ही गाने रहें।

सन्तलाल जी-वकील हैं। परमात्मा इन्हें प्रसन्न रक्खे-यह मेरा हार्दिक आशीर्वाद है।

अब इधर कुछ कालसे "जयपुर-स्टेट" में आनेपर रंग और भी चढ़ता जाता है।

यहां मेरेसच्चे माननीय मित्र-श्रीमान् मुंशीमक्खनलालजी M. A. डाइरेक्टर आफ़ पबलिक इन्सट्रक्शनको भगवान् चिरञ्जीव रक्खें इनकी मुझसे सची प्रीति और सच्ची कृपा सराहनीय है।

बात बढ़गई-भूमिका में बहुत ज्यादा तूल देना नहीं चाहता-एक बात और लिखकर समाप्त करता हूं। बात-वोहीबात-सब से बड़ीबात-कथा और गायन के सुधारहोनेकी बात-

यदि इस विद्या को "भविष्यमें" विद्या बनाये रखना है-तो पाठक, लेखक, कथावाचक, गायक, मेरी इस तुच्छ विनतीपर ध्यानदेवें !!! यह ब्राह्मणकुमार आज यह ही भिक्षा मांग रहा है।

श्रेष्ठ गायनसे विचार होगा, विचार होनेपर विकार का नाश होगा, विकार नाश होनेपर परमात्मा में मन लगेगा, परमात्मामें मन लगने पर आप "निजानन्द" को प्राप्त होजावेंगे-

वीणावादनतत्वज्ञः, श्रुतिजातिविशारदः।
तालज्ञश्चाप्रयासेन, मोक्षमार्गं स गच्छति॥

विनीत--राधेश्याम

* ओ३म् *

राधेश्याम-कीर्तन

(पं० राधेश्याम कथावाचक द्वारा रचित)

गाना नंबर (१)

बहुत जग से घबड़ाए हैं । शरण में तेरी आए हैं ॥
विषयों में मदमत्तहो, भूले तेरा ध्यान ।
उम्र गँवाई मुफ्तमें, रहे सदाँ नादान ॥
हाय स्वारथ में भुलाए हैं । शरण में तेरी आए हैं ॥
बालकपन खेलत गयो, तरुणाई कियो भोग ।
बृद्ध भए रोगी बने, घृणा करैं सब लोग ॥
काल से नित भय पाए हैं । शरण में तेरी आए हैं ॥
खेल तमाशों में रही, नाथ हमेशा प्रीत ।
लगै भजन में मन नहीं, बुद्धि भई बिपरीत ॥
इसी से चक्कर खाये हैं । शरण में तेरी आये हैं ॥
नये तीन तापों बहुत, हटै न मद और काम ।
दीन, दुखी, व्याकुल विकल, भयो हे राधेश्याम ॥
दयाकी आश लगाये हैं । शरण में तेरी आये हैं ॥

ग़ज़ल (नं० २)

बिन आपके किरपाल, यहां कौन हमारा ।
रछपाल मेरे हाल को, अबतक न निहारा ॥
घबड़ा रहा हूं जाल में, अबतक न हूं सरसाल ।
मुझ दीन को दयाल ने, क्यों दिलसे बिसारा ॥
हस्ती का ख्याल करता है, दिनरात पायमाल ।

काफ़ी है दीन दासको, थोड़ासा इशारा ॥
आगे को भी सरकार की, ऐसी रहै कृपा।
जैसा कि बालपन से, अभीतक है सुधारा ॥
औगुण क्षमा ही करते हैं, बच्चे के पिता मात।
अच्छाहूं या बुरा हूं, मैं बालक हूं तुम्हारा ॥
है नाम 'राधेश्याम', तुम्हारे गुलाम का।
कुछ जानता नहीं है, तुम्हारा ही सहारा ॥

गाना (नं० ३)

हम पर कृपा करो अखिलेश, दीनानाथ कहानेवाले ॥
दीन दासकी आस लगी है प्यास बुझाओ स्वामी।
त्रास नास कर वास बतादो पास रहे अनुगामी ॥
नाशै सब सन्सार कलेश, सच्चा मार्ग दिखानेवाले ॥ १ ॥
भ्रष्ट बुद्धिको श्रेष्ठ कीजिये कष्ट नष्ट हों सारे।
रुष्ट न बैठो दृष्टि फेरदो तुम हो इष्ट हमारे ॥
दर्शन देतेरहो हमेश, सोये कहां जगानेवाले ॥ २ ॥
मेरे माई बाप आप हैं पाप ताप है भारी।
लोट पोट मायाकी चोट में ओट है गही तुम्हारी ॥
देते रहो ज्ञान उपदेश, घरकी राह बतानेवाले ॥ ३ ॥
दीन, हीन, आधीन तुम्हारे 'राधेश्याम' बिचारो।
डूबत उछलत भवसागर बिच दामन गहो तुम्हारो ॥
अबतो तुम्हीं मेरे सर्वेश, नौका पार लगानेवाले ॥ ४ ॥

राग भैरव (नं० ४)

हे मंगलमय दीनदयालो, लीजे खबर हमारी रे।
स्वारथमय संसार जानकर, आयो शरण तुम्हारी रे ॥
हे जगदीश्वर जगके नायक, अष्टसिद्धि नवनिद्धिके दायक।
अर्ज़ करत हों मर्ज़ बड़ो है, ग़र्ज़ पड़ी है भारीरे ॥ १ ॥
दर्शनकी अभिलाष रैन दिन, बिनवत राधेश्याम दीनजन।
सुमरन-भजन-तनक नाहिं जानत, मांगत दान भिखारीरे ॥ २ ॥

राग आसा (नं० ५)

कृपा करो आनन्दकन्द अब शरण तुम्हारी आयोमैं ।
लेउ खबर जगदीश हमारी, पाहि पाहि मैं शरण तुम्हारी ।
रक्षपाल सुन नाम स्वामि को, अभिमत याचन धायो मैं ॥
नहीं बुद्धि विद्या चतुराई, कृपासिन्धु तुम होउ सहाई ।
डूबत उछलत भवसागर विच, अबतक पार न पायोमैं ॥
विषय लीन अति हीन दीन हौं, तेरो हौं तेरे अधीन हौं ।
पञ्चभूत त्रयताप पाप में, अजहूं चित्त फँसायोमैं ॥
राधेश्याम चरण को चाकर, गिरो तुम्हारी शरण में आकर ।
शुद्धी हेतु पतितपावन से, हठ वश ध्यान लगायो मैं ॥

नाटककी लय (नं० ६)

("गुलशन जोबन पर है" । इसकी तर्ज़पर गाना चाहिये)

सर्वाधार ओ३मकार, सार है । गाओ भाई--"हरिहर हर"
"हरिहर हर" गाओ भाई !!
"अर्शोफ़लकमें--शम्शोक़मरमें-संगोशजरमें-बहिरोबरमें-मंज़िलमें
महिफ़िलमें है तूही !!
हमज़ारी, संसारी, दुखियारी, भयभारी, करवारी, ग़मख्वारी,
दिलदारी आह ॥
अफ़सर तू, सरवर तू, दावर तू, परवर तू, बरतर तू, बिहतर तू,
जगके कर्तार ! जय, जय, जय, !! धन, धन, धन, !! प्रभो-प्रभो,
द्रवो-द्रवो, क्षमो-क्षमो, गाओ भाई "हरी हर हर" हरी हर हर"
गाओ भाई ॥

राग श्यामकल्याण (नं०७)

नाटककी लय ४ ताल ।

तू है सबका आधार । सतचित घन ओंकार ॥ निर्भय निर्वैर

अपार। पावत नहीं कोई पार ॥ प्यारी है न्यारी है शान तेरी किरदगार। वेद शेष पावें नहीं कोई पार। तू है आला-तू है बाला मेरेदाता मेरेआक़ा-मैं तुझपै हूं निसार ॥

अर्शो फलक का, हूरो मालिक का, कुल्लो खल्क़ का, बहिरो-बरका, संगोशजर का, शम्शो क़मर का, सिरजनहार। दासहै तेरा 'राधेश्याम'। हूं गुनाम ख्वाकसार। है प्रणाम बार बार। प्रभो प्रभो-द्रवो द्रवो-नमो नमो हे करुणागार।

गाना (नं०८)

("चले सियाराम लषण बनके"-इसके वज़न पर)

सकल जगमें अँधियारा है, भरोसा नाथ तुम्हारा है ॥
खूब तजुर्बा करलिया, थोथी जगकी प्रीत।
वक्त सफ़ाई का नहीं, समय हुआ विपरीत ॥
इसी से तुम्हें पुकारा है, भरोसा नाथ तुम्हारा है ॥
मैं-बालक हूं आपका, आप हैं माई बाप ॥
आगे को उम्मीद है, करोगे रक्षा आप।
मुझे अब तलक सुधारा है, भरोसा नाथ तुम्हारा है ॥
शीघ्र सुबुद्धी दीजिये, तुमसे कौन दुराव।
खता देखकर भी मेरी, तजो न आप स्वभाव ॥
यही बस कथन हमारा है, भरोसा नाथ तुम्हारा है ॥
काहूके बल 'बाहु' को, काहू के बल "दाम" ॥
एक 'तुम्हारे बल' रहे, निर्भय 'राधेश्याम'।
तुम्हारा सदा सहारा है, भरोसा नाथ तुम्हारा है ॥

बैंडकी तर्ज़ (नं०९)

निर्विकार, ओंश्कार, सबके अधार-मेरेस्वामी सिरजनहार। अधम, अधम, मैं पापीजन, चरन शरन, लगी लगन, बिघनहरन तारन तरन, सुनो मेरी पुकार-महिमा तेरी अपार, तू है दयावतार, तूही है करुणागार !! मैं दीन हूं मैं हीन हूं, अधीन हूं मली-

न हूं, तू दीनबन्धु दीनानाथ विद्याभण्डार। हो, सत्यका प्रकाश अज्ञान का हो नाश। परिपूर्णहो अभिलाष-है"राधेश्याम" दास। पातुमाम–पातुमाम–है प्रणाम बार बार (मेरेस्वामी)

'बैंड' नाटककीतर्ज(नं०१०)

("मैं हूं ज़हिरी नाग-बनूं क़ाहिरआग"-इसके वज़न पर गाओ)

प्राणाधार, सर्वाधार, सतचितघन ओंकार, तार।
दुखियारी, सन्सारी दीनको। भारी भिखारी अधीनको॥
शरणागतके पालन पोषनहार, हेकरतार, सिरजनहार,
तेरीजय हो, जय, सुनले 'राधेश्याम' पुकार॥

रागभैरव (नं०११)

कृपाकर दीजै कृपानिधान।
तप बल, धन बल, और बाहुबल, चौथो बल सन्तान।
नाथ न हमरे हैं एकहुबल, त्राहि त्राहि भगवान॥
मैं अनन्त औ गुणधारीहूं, तुम अनन्त गुणखान।
मैं अतिदीन, दीनबन्धू तुम, नीको भयो मिलान॥
एक आपकी कृपा भये ते, जगत करै सम्मान।
बिना कृपाके डोलें घरघर, कूकर काक समान॥
कहा भयो बढ़गये कुटम्बी, बने अधिक गुणवान।
जहां न पूजन भजन आपको, ऐसो गृह समशान॥
दुराचारमें रहे जनमसे, कियो न ज्ञान न ध्यान।
कौन पुण्यसे नाथ हमारो, अन्त करैं कल्यान॥
अर्थ न धर्म्म न काम मोक्षको, मांगत हैं बरदान।
जब जब जन्म पाय जग आवें, गावें तुम्हरो गान॥
तुम हो सब गति जाननहार, "राधेश्याम" अजान।
जो कछु अबतक कीन्ह ढिठाई, क्षमा करो श्रीमान॥

कहिर्वा (नं० १२)

उमरिया बिताय दई, प्रभु नहीं चीन्हा।
खिल खिलकर मुरझाये बगीचा, बहरिया लुटाय दई। (प्रभु०)
काशी गयामें ढूँढा पियाको, डगरिया भुलाय दई। (प्रभु०)
'राधेश्याम' भई नहीं सौदा, बज़रिया बढाय दई। (प्रभु०)

क़व्वाली। (नं० १३)

हो यक नज़र इधरभी, दोनों जहानवाले।
अय सरज़मीन वाले, ओ आसमान वाले॥
मैं हूं ग़रीब कमतर, तू है ग़रीबपरवर।
सुन ख़ाकसारकीभी, अय आन शान वाले॥
हरबार मुलतमिसहूं, के मुक़ईयदे क़फ़सहूं।
ज़ंजीर तोड़ता जा, कोनो मकान वाले॥
दुनियां से है न रग़बत, जन्नतकी भी न चाहत।
गर है तो यहहै अरमां, सच्ची ज़बान वाले॥
तेरीहो मुझपै शफ़क़त, मेरीहो तुझसे उलफ़त।
परदा न मुझसे ज़ेबा, ओ बेगुमान वाले॥
है आशकार हरजा, फिरभी ग़ज़बका परदा।
घूंघटमें छिपरहा है, बांकी कमान वाले॥
है 'राधेश्याम' दिलमें, चर्ख़ो ज़मींमें गिलमें।
पाया निशाँ न तेरा, अय बेनिशान वाले॥

थियेट्रीकल। (नं० १४)

मन भजले विश्वम्भरको। ईश्वरको॥
तजदे सब आडम्बरको। भय डरको॥
गर चाहे तू कल्यान, छोड़ अभिमान, लगाले ध्यान,
बढाले ज्ञान, भूल मत जा अपने अफ़सरको। परवरको॥
यह दुनियां मिस्ले ख्वाब, तू पाबारकाब, है चन्द शबाब, अख़ीर

जवाब, छोड़ जायेगा यहीं घरदरको । ज़न ज़रको ॥

तू जोड़ जो रखता जाय, न काम यह आय, यहीं रहिजाय, तुझे भी डुबाय, अन्त ले जाय नर्क में नरको । घर भरको ॥

इस लियेतू कर यहकाम, ले उसका नाम, देख निजधाम, है राधेश्याम, बैठ ग़ाफ़िल न कभी दमभरको । भजहर को ॥

भैरवी (नं० १५)

("अपार तेरी माया, माया है तेरी अपार" इसकी तर्ज़ पर)

क़ुरबान तेरी क़ुदरत, क़ुदरतके तेरी क़ुरबान ।

कैसे कैसे मट्टी के पुतले बनाये, डालीहै फिर उनमें जान ।
अपने को परदोंमें ऐसा छिपाया, चक्कर में आये सुजान ।
तू ही अब ऐसा बना 'राधेश्यामहि, तेरा करे रोज ध्यान ।

राग सारङ्ग आठ भाषा (नं० १६)

जगदीश तुही धन धन है (टेक)

(१)हिन्दी-

तू सतचित आनँदघन है । दुष्टों का मानमर्दन है ।
भक्तों का प्राणजीवन है । है तू दीनोंका दयाल,
साधू सन्तोंका प्रतिपाल, हर जगह तेरा बरनन है ॥

(२) फ़ारसी-

रज़्ज़ाक़े हरदो आलमतो । मुश्ताक़े रहिम, राहिमतो ।
खल्लाक़ो, शादो खुर्रमतो । खुदरां उश्शाक़ो महिबूब,
हरजा जलवाफिगन मरग़ूब, हरचे मख़्फ़ियो रोशन है ॥

(३) अङ्गरेजी-

ओगाड बी काइंड टूमी नाऊ । आई अम्बलकाँचर टूदी बाऊ
फार गिव माई सिन्स ओदाऊ । दाऊ आर्ट माई गाड,
दाऊ आर्ट माई लार्ड, दाई ई क्वेल हेअर नन है ॥

(४) पञ्जाबी–

सरदारां मैंनू भांदां । बागों दे विच्च नहीं आंदा ।
दी दों दे बिना जीजांदा । मैंनू कर करके बेहाल,
घुलदा गैरोंदे नित नाल, तुसीं मते गुणादी खनहै ॥

(५) बङ्गाली–

आमरबाड़ी मोनी आवे। चानटाब कोरबे ज्वल खावे ।
बेला-सारंग बजावे । गावे गात्रे मिष्टीतान,
आमार जीवनेर आन, म्याशय तूमीस्वज्ञान है ॥

(६) पूर्वी–

मुरहू हरली मनवा है । भटकौले बन बनवा है ।
दौं लगवा मन तनवा है । ऐस ऐस दुनवा कौन ।
जियरा करलेलस आधीन, टंटा न नीक यह खन है ॥

(७) जयपुरी–

म्हांकी थांकी यारी छै ! थांकी गढ सिरदारी छै ।
विनती थांसे म्हारीछै । ऐंडे महिल्यां म्हांके आजो,
ढोला भांगड़ो पिलाजो, अनदाता थांने सौगनहै ॥

(८) संस्कृत–

सच्चिदानंद वन्देऽहं । नित उक्त पदाम्बुज ध्येयं ।
पुन कथित छन्द लिपिसमं। यत्र यत्र "राधेश्याम"
तत्र तत्र पातुमाम, पदसर्वं त्वाम् समर्पण है ॥

क़व्वाली वेदान्त (नं० १७)

मुझे महिफिल मे अपनी किसलिये तुमने निकाला है ।
खता ऐसी हुई है क्या जो दिलमें फ़र्क़ डाला है ॥
मैं उस दरिया का कतरा हूं हमेशा मौजपर है जो ।
बुराहो अय हाविस तेरा वहांसे मुझको टाला है ॥
जवाहर कोठरी में है वो चाभी पास है मेरे ।
मगर इतना नहीं ज़ाहिर किधर से खुलता ताला है ॥
उधर दरिया उमंडता है इधर ग़लबा हवा का है ।
वो अब सब पेश आया है न जिसको देखा भाला है ॥

उठाता यार रुखपरसे नक़ाब आहस्ता आहस्ता।
हिजाब अब दोनों जानिबका रवाना होनेवाला है॥
खुदा हाफ़िज़ है अय यारो मिला अपने में राधेश्याम।
जो देखा ग़ौर कर हमने तो सब में इश्क़ आला है॥

क़व्वाली वेदान्त (नं० १८)

न शबको ख्वाब आता है न दिनको चैन दमभर है।
तेरे इस जांबलब शैदा का सब दिन हाल अबतर है॥
तेरे दरियाये उल्फ़तमें यही तो एक खूबी है।
किसीके हाथ कङ्कड़ है किसीके हाथ गौहर है॥
जुनून इश्क़ अग्वगर है जुदाई तेरी सरसर है।
क़यामत होनेवाली है न दिलरुबा है न दिलबर है॥
हक़ीक़तमें न हुज्जत है न कहनेकी ज़रूरत है।
ज़बानो आंख क़ासिर है फ़क़त एक ज़ाते मज़हर है॥
कहा सब कुछ मगर कुछभी नहीं कहना है 'राधेश्याम'।
हमारी रायमें यारो खुदासे इश्क़ बढ़कर है॥

गाना (नं० १९)

("जानमन जो नज़ारा न होगा" । इसके वज़न पर गाओ)

नाथ अब तो न देरी लगाना।
मुझको मेरा बताओ ठिकाना॥ १॥
कबतक फसाये रक्खोगे मायाके जाल में।
नाहक़ ही देर करते हो तुम मेरे ख्याल में॥
बाक़ी अब क्या रहा आज़माना॥२॥
सन्सारमें रखना ही है तो साफ बतादो।
वरना मेरी इन किलनियोंको जल्द छुटादो॥
अब न सूझै यगाना बेगाना॥३॥
गो-इल्म है शुहरतभी है कुनबाभी है नामी॥
पर मेरे यह किस कामका है सोचो तो स्वामी॥

मुझको दिलवाओ असली खज़ाना॥४॥
यह खूब पुकारे हुये कहता हूं नाथ से।
पछताना पड़ेगा जो गया वक्त हाथ से॥
मुझपे तुमपे हंसेगा ज़माना॥ ५॥
बुद्धीका, न बलका, न है कर्मोंका सहारा।
हां आपही चाहैं तो बने काम हमारा॥
याद है एक विनती सुनाना॥ ६॥
मंज़िलपे तो क़दम है मगर कांप रहा है।
घनघोर घिरे आते हैं अन्धेर ये क्या है॥
रोशनी जल्द लाकर दिखाना॥ ७॥
जल्दी में निकल जाय न पूंजी रही सही।
बस चुपहो'राधेश्याम'तू जो कुछ कही कही॥
फ़र्ज़ है जज़बये दिल छुपाना॥ ८॥

नाटककी चाल (नं० २०)

("वहां जाओ, मन भाओ" इसकी तर्ज़पर गाओ।)।

सभी आओ, मिल गाओ, ईश्वरके धन्यवाद गाओ॥
विषयले राग जो गातेहो। नतीजा नेक न पातेहो॥
हरिगुण क्यों नहीं गातेहो। हां-भाई ज़रा शरमाओ।
शेर-हाय अब देश बिगड़ताही चला जाता है।
,, गानविद्याको नया दोष लगा जाता है॥
,, जिसके ज़रिये से यह मन ब्रह्मको पा जाता है।
,, आज उस नादका यूं नाश हुआ जाता है।
हां--राधेश्याम ध्याओ। सभी आओ, मिलगाओ॥

नाटककी चाल (नं० २१)

("ऐसे धोका देनेवाले" इसकी तर्ज़पर गाओ)

सब जन मन ईश्वरमें लाओ, निशदिन उसके ही गुण गाओ।

नरतन ना बिरथा गंवाओ, हरदम जगदीश्वर को ध्याओ,
ईश्वरमें गर ध्यान लगाओ, मुक्ती भुक्ती का सुख पाओ,
बापो माई बहिनो भाई नार लुगाई रिश्तेदार।
सारे धन जोबन के साथी दुखदेवा मतलबके यार॥
छोड़ो छोड़ो इनसे रगबत, जोड़ो जोड़ो हरिसे उलफत,
तोड़ो तोड़ो विषयी संगत, मोड़ो मोड़ो इनसे सूरत,
वादिन कोई काम न आवे रहिजावे सब घर और माल।
जादिन वो विकराल व्यालसा काल भरेगा आकर गाल॥
इससे हरिमें ध्यान लगाओ, ग़फ़लतको अब दूर भगाओ,
विषयों से मनको बचाओ, पर उपकारोंको कराओ,
होने आई शाम। करलो करना है जो काम।
गावे पुन पुन राधेश्याम। बोलो सब मिल हरिका नाम।
करलो आगेका उपाओ। अबभी अबभी मान जाओ।

नाटककी चाल (नं०२२)

मूढ तूने अबतक न हरिको मनाया।
ज़रा जागा नहीं, मदत्यागा नहीं, चैन पाया नहीं दिन गँवाया॥
ऐसा मद होश हुआ जानके भूला घरको।
अपना तनधन समझ विषयों में लुटाया ज़रको॥
जिसने हरिसे न करी प्रीति वो नर कुछभी नहीं।
जिसमें सुमरन न हो ईश्वरका वो घर कुछभी नहीं॥
तूतो सोताही रहा, सारा दिन ख़तम हुआ,
काल है सरपै खडा, नरका तन यूँहीं गया,
हरिके चरणोंमें न अबतक भी लगाया मनको।
राधेश्याम यूंहीं गंवाया अरे तीनों पनको॥
हाय! बहुतेरा तुझे समझाया॥

ग़ज़ल (नं०२३)

जिसने हरिसे न करी प्रीति वो नर कुछभी नहीं।

जिसमें सुमरन नहो ईश्वरका वो घर कुछभी नहीं ॥
प्यार और लाड़ में, करदे जो जवां अपना पिसर ।
इल्म मुतलक़ न सिखाये वो पिदर कुछभी नहीं ॥
अपने ही मुंहसे बयां अपनी जो तारीफ़ करे ।
अच्छे जन उसमें बतायेंगे हुनर कुछभी नहीं ॥
लाख को खाक किया सुहबतेबद में जाकर ।
धर्म्म के काम न आया हो वो ज़र कुछभी नहीं ॥
अपनाहो मतलबी और वक़ पै धोका देवै ।
ऐसे यारोंकी कहींपरभी क़दर कुछभी नहीं ॥
जिस सखुन में न हो बू धर्म्मकी अय 'राधेश्याम' ।
चाहे कैसाही वो रंगीं हो मगर कुछभी नहीं ॥

ठुमरी कामोद (नं० २४)

मन जपले नित ईश्वरको । जो स्वामी सिरजनहार है समझाऊं मैं तोहि बार बार ॥

अन्तरा ।

वोही अखिलेश्वर त्रिभुवननायक, सतविद्याभण्डार-रे-जाहि जपत सुरनर मुनियोगी-भज भज वाही दिलबर-को !!

२ रा अन्तरा ।

राधेश्याम भज सतचितघनको, जगन्नाथ जगवन्दनको, परमेश्वरको-भुवनेश्वरको-भज भज विश्वम्भरको !!!

ग़ज़ल (नं० २५)

सच्चे दिलसे जो लगन उसमें लगाई होगी ।
इसमें कुछ शक नहीं यक रोज़ सुनाई होगी ॥

कूद दरियामें पड़े पार तो जावेंगे जरूर।
नाव तूफ़ान में बेसबरोंकी आई होगी॥
दे के सर ऊखली में चोटको फिर क्या गिनना।
बोतो वोही हैं बुरोंमें भी भलाई होगी॥
उसके दरबार में जान के वबाले हैं बहुत।
अपनी तो यार इताअत से रसाई होगी॥
दीनो दुनियां से गये और न उकबा के रहे।
ऐसे बदक़िस्मतों से खाक कमाई होगी॥
या वही मेरे बनें या मुझे अपना करलें।
आज सरकारमें चलकर यह सफाई होगी॥
खुद वो खिंचते ही चले आयेंगे जब 'राधेश्याम'।
तालिबे दीद अड़े हैं यह दुहाई होगी॥

ग़ज़ल (नं० २६)

दिल किसीका न दुखाया है तो बरकत होगी।
कर दिया रंजो अलम दूर तो राहत होगी॥
रोज टालाकिये तुम आज न हम मानेंगे।
कौन कह सकता है कलभी तुम्हें फ़ुरसत होगी॥
ज़र्फ़ गर पाक है जब चाहेंगे पालेंगे-तुझे।
दिल अगर साफ़ किया है तो इबादत होगी॥
पर्दे पर्दे में हर यक साज के तू बोल रहा।
अय मेरे पर्दानशीं क्यों मुझे हैरत होगी॥
तेरे कहलाके भी दुनियां के ग़मो रंज रहे।
यार फिर सच तो यह है तुझको भी ग़ैरत होगी॥
दिल में बैठा हुआ कहता है कोई "राधेश्याम"।
नफ्स गर मार चुका है तो शहादत होगी॥

लावनी (नं० २७)

चाहे पलट जाय सब जमाना, पर हमतो दिलमें बटा चुके हैं।

बुरा अब हम उसको क्या कहैंगे, जिसे के अच्छा बताचुके हैं॥
न पीछे लौटेंगे यादरक्खो, क़दम जो आगे बढ़ा चुके हैं।
हज़ार गो मुशकिलें पड़ें अब, हम अपनी धीरज बंधाचुके हैं॥
ज़बाँ से जो कुछ किया था वायदा, उसी में तन मन लगाचुके हैं।
कहां की दुनिया किधर है उक़बा, हम अपनी हस्ती मिटाचुके हैं॥
हमें न मख़मल जरी चाहिये, हम अपना चोला रंगाचुके हैं।
बुरा अब हम उसको क्या कहैंगे० ॥ १ ॥
हज़ार परदों में ढूंढ करके, किसीको अपना बनाचुके हैं।
लगन थी जिसकी हमारे दिलमें, उसीमें खुदको मिला चुके हैं।
कभी न भूलेंगे तुझको दिलबर, यह हम क़सम क़ौलखाचुके हैं॥
उसी के हाथों है मुन्सफी अब, हम अपनी गरदनझुकाचुके हैं।
हमें न माहिलो मकांकी ख्वाहिश, हम अपना मन्दिरसजाचुके हैं॥
बुरा अब हम उसको क्या कहैंगे० ॥ २ ॥
लो माफ़ हो माफ़ कहरहे हैं, के तायरे दिल फसा चुके हैं।
वो हमको बेदाम, दाममें ला, क़फ़स में दाना खिला चुके हैं॥
नक़ाब रुखसे उठाके अपनी, वो हमको दर्शन दिखा चुके हैं।
वो हमको दिल से निभा चुके हैं, हम उनको दिलमें बसा चुकेहैं॥
न मैल आने की अब जगह है, हम अपनी पोशिश धुलाचुके हैं।
बुरा अब हम उसको क्या कहैंगे० ॥ ३ ॥
लो खैंच आईना दिलपै सूरत, औ पुतलियोंमें बिठाचुके हैं।
महव हुये हैं यहां तलक हम, के अपना आपा भुलाचुके हैं॥
पड़ाथा जन्मोंसे जोके झगड़ा, हम आज उसको हटाचुके हैं।
जो तू सो मैं हूं जो मैं सो तू है, यह ख्याल पुख्ता जचाचुके हैं॥
असर चढ़े 'राधेश्याम' किसका, हम अपनी रगत जमाचुके हैं।
बुरा भला उसको क्या कहैंगे० ॥ ४ ॥

क़व्वाली (नं २८)

अगर इच्छा है दरशन की, तो भक्ती तो बढ़ाता जा।
धुला कर अपनी पोशिश, प्रेम के रँग में रँगाता जा॥

पक्का कर ज्ञान का चूना । हृदय को साफ़ कर लेना ।
यह पहिला फ़र्ज़ है तेरा, विकारों को छुटाता जा ॥
हटा पंचाग्नि और माला, किताबें डाल पानी में ।
प्रथम सत्सङ्ग में चल कर, कुटिल मन को मिटाता जा ॥
फिर अपने शाह पै जाकर, दुई और मन का सौदा कर ।
उन्हीं से प्रेम धन लेकर, उन्हीं पर बस लुटाता जा ॥
न "राधेश्याम" घबड़ाना, कहाँ अपना औ बेगाना ।
दुई को दूर करके भस्म, इकताई रमाता जा ॥

ठुमरी कान्हरा (नं० २९)

हाय-सारी उमरिया, मनई, बिरथा बीत गई ।
गई जवानी फेर न आवे, जावे इक दिन रोय,
मूल हू खोय, धूर में समाय गई ॥

अन्तरा ॥

जा तन जानी जात न जानी, मानी नाँहिं,
मानी नाँहिं, मानी नाँहिं, एती देर भई ॥ १ ॥

२ रा अन्तरा ॥

जानत है पर गुनवत नाहीं, आप में आप, लखत है नाहीं,
'राधेश्याम' छोड़ जमुहाँहीं, बोल ! ब्रह्मसच्चिदानन्द कन्दकीजय !!
अरे मेरे मनई ॥ २ ॥

लावनी पीलू (नं० ३०)

है नर वोही जो हरि में प्रीति लगावे ।
है धन वोही जो काम धर्म के आवे ॥

है सती वोही जो पतिको ईश्वर माने।
है पण्डित वोही जो वेद शास्त्र को जाने ॥
है ज्ञानी वो जो आत्मतत्व पहिचाने।
है गुणी वोही जो निज महिमा न बखाने ॥
है गुरु वोही जो शिष्य को ज्ञान बतावे।
है धन वोही० ॥ १ ॥

हैं शिष्य वोही जो गुरु की सेवा करते।
हैं सेवक वो जो निज मालिक से डरते ॥
हैं मित्र वो जो दुख में नहीं टारे टरते।
हैं सन्त वोही जो सबका सङ्कट हरते ॥
है उत्तम वो जो किसी का जी न दुखावे।
है धन वोही० ॥ २ ॥

सन्तान वोही जो बड़ों की आज्ञाकारी।
वैराग वोही जो रहै न चाह चमारी ॥
धीरज वोही जो दुख में नहो दुखारी।
धनवन वोही है जो न होय हंकारी ॥
है वोही गवैया जो प्रभु के गुण गावे।
है धन वोही० ॥ ३ ॥

है सुमति वोही सब चित्त एक हो जावें ॥
हैं श्रेष्ठ वोही जो दया दीन पर लावें ॥
हैं पीर वोही जो खुद में खुदा दिखावें।
हैं सुजन वोही जो पर उपकार करावें ॥
है 'राधेश्याम' वो कथन जो धर्म्म बढ़ावे।
है धन वोही० ॥ ४ ॥

लावनी एमन (नं० ३१)

नाम रहैगा उन्हीं का जोनर, धर्म में धनको लगायेंगे।
धनवाले कंजूस जहांके, जोड़ जोड़ मर जायेंगे ॥
हाथ से अपने खाया न खर्चा, अगर जमा ज़र किया तो क्या।

किया धर्म व्योपार नहीं कुछ, विषयोंमें जो दिया तो क्या ॥
प्रेम का प्याला पिया नहीं, ह्विसकी और ठर्रा पिया तो क्या ।
ऐसा मक्खीचूस धनपती, अगर सौ बरस जिया तो क्या ॥
जो धन धर्ममें खर्चेंगे, वो यहां वहां सुख पायेंगे ॥
धनवाले कंजूस जहांके० ॥ १ ॥

जहां भजनहों ईश्वरके, बस वहां पै जाते शरमाते ।
विषय वासनाके गानोंमें, सरे राह खुलकर आते ॥
ज्ञान ध्यान के पदोंसे नफ़रत, हीरे रांझे नित गाते ।
वेद शास्त्र रद्दी समझे हैं, झूंठ क़िस्से मन भाते ॥
यहांसे अपयश लेकर वो नर, यमकी मार वहां खायेंगे ।
धनवाले कंजूस जहांके० ॥ २ ॥

न्हाय धोय सिंगार बनाया, हरिका सुमरन कुछ न किया ।
नीचोंकी संगतमें बैठकर, नाम बड़ोंका डुबो दिया ॥
फ़िज़ूल बातों में धन लुटाते, फ़कीर को गाली ठठिया ।
घरवाली तो भूखों मरती, वेश्याको रबड़ी गुझिया ॥
मानो चाहे न मानो यारो, हम तो यही सुनायेंगे ।
धनवाले कंजूस जहांके० ॥ ३ ॥

धन पानेका मज़ा यहीहै, उन्नति दो व्योपारों को ।
नहीं तो यारो अरपण करदो, यूनिवर्सिटी वालोंको ॥
बाम तरक्की पर करदो, गुरुकुल ऋषिकुल स्थानोंको ।
देर लगाना नहीं चाहिये, धर्म और शुभकामोंको ॥
कहै यह "राधेश्याम" विषयला, गाना हम नहीं गायेंगे ॥
धनवाले कंजूस जहां के० ॥ ४ ॥

दुशेरा लावनी (भैरवी) (नं० ३२)

अब हम घनकी तरह तपाकर ठण्डे जल बरसाते हैं ।
देश कलंकित किया जिन्होंने उनका नाम बताते हैं ॥
पहिली गिनती है उनकी जो बेचके बेटी खाते हैं ।
हाय हाय है बात शर्मकी ज़रा नहीं शरमाते हैं ॥

नख शिख वाली नई नुकीली लड़कीको बतलाते हैं।
साठ बरसके बूढ़े को रुपया लेकर दे आते हैं॥
ऐसी बेवाओं की आहसे फ़लक ज़िमीं थर्राते हैं।
देश कलंकित किया जिन्होंने० ॥ १ ॥
दूसरा नम्बर उन लोगोंका जो शौक़ीन कहाते हैं।
रईस सेठोंके लड़कोंके यार गार बनजाते हैं॥
नाच खेलका शौक़ दिलाकर मयनोशी सिखलाते हैं।
आख़िर उसको तमाशबीं कर खुद कुरम बनजाते हैं॥
जोड़ जोड़ यूं पाप का रुपया अपना घर बनवाते हैं॥
देश कलंकित किया जिन्होंने० ॥ २ ॥
तीसरी गिनती में वो शराबी जो बेहद पीजाते हैं।
रोज़ रोज़ भट्टी पर जाकर अपना स्वांग दिखाते हैं॥
नहीं जानते दवा है दारू अक्लो होश गंवाते हैं।
आख़िर गलियोंमें गिरकर कुत्तों से मुंह चटवाते हैं॥
यार न कोई बुरा मानना सच्ची बात सुनाते हैं।
देश कलंकित किया जिन्होंने० ॥ ३ ॥
चौथा नम्बर उन बापोंका लड़कोंको बिगड़ाते हैं।
लाड़ प्यारमें जवान करदें इल्म न ज़रा सिखाते हैं॥
ब्रह्मचर्य्यपे ध्यान न देकर बदसुहबत बिठलाते हैं।
छोटेपनसे ही नाजायज़ उनको शौक़ दिलाते हैं॥
आख़िर होकर बड़े वोही लड़के बदमाश कहाते हैं।
देश कलङ्कित किया जिन्होंने० ॥ ४ ॥
पांचवीं गिनती उन लोगोंकी जो दीनोंको सताते हैं।
बेक़ुसूर बेबात ग़रीबों का दिल जो कि दुखाते हैं॥
कङ्गालों को मार मारके अपनी शान बनाते हैं।
यतीम बेवाओं की धरोहर जाल बना खा जाते हैं॥
निर अपराधी को न सताओ यह हम तुम्हें सुझाते हैं।
देश कलङ्कित किया जिन्होंने० ॥ ५ ॥
छठा है नम्बर उन गुरुओं का बगुला भगत कहाते हैं।
सालाना दस्तूरी लेते और मुँह देखी गाते हैं॥

अर्थ न धर्म न काम मोक्ष कुछ ज्ञान न ध्यान सिखातेहैं ।
चेला से बेटा कहकर चेलिनसे आंख लड़ाते हैं ॥
हाय धर्म की नाव हमी खुद अपने आप डुबाते हैं ॥

देश कलङ्कित किया जिन्होंने० ॥ ६ ॥

सातवें नम्बर में फ़कीर वो जो मक्कार कहाते हैं ।
दिनमें बड़े पुजारी बनते रातको डाका डाते हैं ॥
धर्म हेतु हमसे धन लेकर नित बेश्या के जाते हैं ।
माल मुफ़्त का कमा कमा कर मदिरा मांस उड़ाते हैं ॥
अक्षर एक न नाम को जानैं अपनी ज़ात छिपातेहैं ॥

देश कलंकित किया जिन्होंने० ॥ ७ ॥

आठवीं गिनती उन मित्रों की जो मतलब से आते हैं ।
कष्ट पड़े जब मित्र के ऊपर फिर नहीं मुंह दिखलाते हैं ॥
बन ग़मख्वार करैं ग़ुख्वारी कपट छुरी चलवाते हैं ।
दोस्त की बदनामियां कराके ख़ुद तालियां बजाते हैं ॥
सुनने वालो तुम्हें तजुर्बा अपना हम बतलाते हैं ।

देश कलङ्कित किया जिन्होंने० ॥ ८ ॥

नवां शुमार ह उन झूठोंका जो कहकर फिरजाते हैं ।
एन वक्त पर धोका देकर अपनी शान दिखाते हैं ॥
सज्जन को देकर के भरोसा वक्त पै मना कराते हैं ।
ऐसेही विश्वासघातियों को यम दण्ड दिलाते हैं ॥
यार न कोई झूठ जानना अपनी बीती गाते हैं ।

देश कलङ्कित किया जिन्होंने० ॥ ९ ॥

कहां कहां तक कहैं देश दुर्दशा की कितनी बातें हैं ।
और फिर कभी लिखेंगे ज्यादा अबतो कलम उठातेहैं ॥
लक्ष न हम करतेहैं किसीपर वक़्की कथा सुनाते हैं ।
साफ़दिलीकी वजेह से यारो सत्य बात हम गाते हैं ॥
"राधेश्याम" बिषयला गाकर जगको नहीं रिझाते हैं ।

देश कलङ्कित किया जिन्होंने० ॥ १० ॥

ग़ज़ल (एमन) (नं० ३३)

नाम न रामका जपा, हाय सितम ग़ज़ब सितम ।
बाम में काम में रहा, हाय सितम ग़ज़ब सितम ॥
युक्ति न मुक्तिकी करी, सोतेही सोते उम्र चली ।
कालने गाल भर लिया, हाय सितम ग़ज़ब सितम॥
कर्म न अच्छा कुछ किया, जन्मसे भर्ममें रहा ।
धर्ममें धन नहीं दिया, हाय सितम ग़ज़ब सितम ॥
हाथसे रतन खोदिया, जतन भजन कुछ न किया ।
कैसा है पर्दा यह पड़ा, हाय सितम ग़ज़ब सितम ॥
होने को आगईहै शाम, करलो जो करना 'राधेश्याम'॥
फिर न मिले समय गया, हाय सितम गज़ब सितम ।

नाटक की लय (नं० ३४)

("बहार मेरे प्यारे गुलशन में आई बहार इसके वजन" पर)

सुधार मन मेरे बिगड़ी हुई को सुधार ॥

खानेमें सोनेमें खेलोंमें मेलोंमे भूला फिरे क्यों गंवार ।
खेलो तमाशों की यारों के बातों की, थोड़े दिनों की बहार॥
चमड़ीपे चमड़ीपे मरताहै गिरताहै, बनताहै क्यों तू चमार।
तुलसी हटाकर बोवै बबूरी, समझै न सार और असार ॥
पावै तभी शान्ती राधेश्याम तू, सूझै जब सच्चा विचार ।

हिण्डोल राग (नं० ३५)

फिर से चेत करो मन मूरख, जो कछु बीत गई सो गई रे ॥
अपनो धन सब आप लुटायो, तबहूं कछु सन्तोष न आयो ।
तृष्णा दिन दिन अधिक सतायो, आयू खोय दई सो दई रे ॥
आप रचै आपी दुख पावै, आप करै आपी पछतावै ।
फिरभी मूरख चेत न लावै, सोचत नाहिं भई सो भई रे ॥
मानी सीख न नेक बड़नकी, घड़ी भई अब अधःपतनकी ।

अजहूं चाल न चलत जतनकी, शठता मोल लई सो लई रे ॥
अबलों जिसमें सुखमाना है, अब क्यों उसमें दुखजानाहै ।
'राधेश्याम' जो तू दाना है, कर फिर बात नई सो नईरे ॥

खम्माच (नं० ३६)

हरि गुण गायेजा अरे मेरे मनुआं, मान कहा यह मोरारे ॥
अन्त समय कोई काम न आवे, देहगेह सब यहीं रहिजावे।
आज काल में काल झपटले, साथी न फिर कोई तोरारे॥
दुर्लभ नरतन करले भजनवा, आगेको कछु सोच जतनवा॥
मानले "राधेश्याम" बचनवा, समय रहा अब थोरारे ॥

आसावरी (नं० ३७)

या सन्सार में अरे मन मूरख, कोइ न साथी तेरा है ।
जब तक सांसा तबतक आसा, चिड़िया रैन बसेरा है ॥
क्यों अभिमान करत अज्ञानी, थोड़े दिनकी है जिंदगानी ।
प्राण निकलगये जिसदम तनसे, फिर तेरा नहिं मेरा है ॥
मेरे ख़ज़ाने मेरे हाथी, मेरे पुत्र और मेरे नाती ।
प्राण निकल गये नहिं कोइ साथी, फूंका जाय सवेरा है ॥
बड़े भाग नरको तन पायो, ताहि पाय तू विषय कमायो ।
धनको गर्व पाय इतरायो, भयो काम को चेरा है ॥
अजहूं जगदीश्वरको भजले, काम क्रोध मद ईर्षा तजदे ।
'राधेश्याम' रूप निज लखले, यह समझनकी बेरा है ॥

कवित्त (नं० ३८)

काहे करत अभिमान मूरख नादाननर सकल सामान यहीं पड़ो ही रहैगो। मेरे धन मेरे माल मेरे सुत मेरे लाल मेरी मेरी कर नैक देर मेंतू मरैगो ॥ रामजप रामजप सार मन्त्र यही मन अन्त याही

मन्त्र सेही फंदन ये कटै गो । राधेश्याम सार औअसार को विचार देख सुख तो तबहिं जब राम नाम जपैगो ॥

कवित्त (नं० ३९)

आन बान छोड़ निज शान पहिचानले मान अभिमान तज मूरख नदान नर । त्याग अज्ञान कज मूढ़ भगवान भज ध्यानकर जानले न भूल धन रूप पर ॥ आठो याम सुबू शाम हरीनाम रट तू राधेश्याम झूठ ठाम गाम बाम धाम ज़र । केते अज्ञानी बलधानी भये फ़ानी अब छोड़के नदानी अभिमानी नेक काम कर ॥

कवित्त (नं० ४०)

मेरे गाम मेरे बाम मेरे ऊंच ऊँचे ठाम मेरो नाम सारे ही सन्सार में विख्यात है । मेरे सुत मेरे नाती मेरे ऊँट मेरे हाथी मेरे धनमान हेर ऊंची मेरी ज़ात है ॥ मेरे रूप मेरे बल मेरे गुण मेरे धन मैं हूं बड़ो आदमी बड़ी ही मेरी बात है । कहै राधेश्याम प्राण तनसे निकस जात तब मेरी मेरी सब धरी रहिजात है ॥

सवैया (नं० ४१)

रावण कंससे बीर बिशाली अरजुन भीम कहां पै बिलाये ॥
दानी करन जैसे मानी चगेज़ से मृत्यु भये जो जन्म धराये ।
दारा सिकन्दर शाहा अकब्बर कालके गालमें सारे समाये ।
नाहकमें 'राधेश्याम' मेरे मन झूठे जहानसे मोह बढ़ाये ॥

कहिरवा (नं० ४२)

इस जगमें नहीं कोई अपनारे ॥
भाई बन्धु स्वारथके संगी मेरा औ तेरा कलपना रे ॥

आंख मिंचे पर सब रहिजावे दो एक घड़ीका है सपनारे।
राधेश्याम पियासे मिलले रस्ता यही नाम जपनारे ॥

दादरा (नं० ४३)

झूठा है सन्सार सभी मतलब के ॥

ज़ाहिर में गमख्वार जगत है बातिन में खूंख्वार सभी मतलब के ॥ १ ॥ बाहर अमृत भीतर विस है बिगड़ी के नहीं यार सभी मतलब के ॥ २ ॥ राधेश्याम अन्त जब सोचत कैसे होवैं पार सभी मतलब के ॥ ३ ॥

गाना (नं० ४४)

बोलो बोलो न लोगोरे कोरी बानीरे
जैसा वक्तव्य करोगे, वोही कर्त्तव्य करोगे, बनोगे ज्ञानीरे
सत्यासत्य विचारलो दिलमें करलो न्याय,
उन्नतिके पथपे चलो राधेश्याम समझाय, सुनो गुज्ञानीरे

नाटक की तर्ज़ (नं० ४५)

("मेरी जानज़ार है बेकरार नहीं कोई मेरा दिलदार" इस वज़न पर)

सब कार बार झूठा पसार है सार नाम ओंकार
सर्वाधारी, करुणागारी, दीनबन्धो, दयासिन्धो, है हमारा वो पिता
दिलको सँभालो तो दिलबरको पालो, पालो २ दुनियां में नाम
ए सोने वालो बिगड़ी बनालो तो मिलैगा सच्चा आराम।
रार छोड़ एक बार 'राधेश्याम' कर विचार

ग़ज़ल "बैंड के तर्ज़पर" (नं० ४६)

ले देख ज़िंदगी के करश्में कोई दिन और।
यह खेल अदा नाच तमाशे कोई दिन और ॥
पैदा हुआ है खाक में मिलना है खाक में।

अय ख़ाकबाज़ ख़ाक उड़ाले कोई दिन और ॥
तू जायगा तो लोग बहसरत यह कहेंगे।
क्या ख़ूब यह होता कि यह रहते कोई दिन और ॥
मैंने कहा सरकार से अब है कहां जोबन।
सुनतेही वो रोने लगे वो थे कोई दिन और ॥
ऐ बेवकूफ़ इस जगह चारा न चलैगा।
कहता है तू किस ज़ोर पै बलपै कोई दिन और ॥
बिगड़ी को बना 'राधेश्याम' वक्त है अबभी।
वरना चौरासी योनि भुगत बे कोई दिन और ॥

ग़ज़ल (नं० ४७)

इन्तिज़ारी में शबो रोज़ रहा करते हैं।
हम तो अय यार उसी बुत को तका करते हैं ॥
हम न सूरत के हैं आशिक़ न नज़ाकत के मुरीद।
हम तो सूरतपे फ़कत जान फ़िदा करते हैं ॥
ख़ाल और बाल पै मरते हैं ज़माने वाले।
हम फ़िदा उसपै जो परदों में छिपा करते हैं ॥
हमको दोज़ख़ से न डर और न जन्नतकीतलाश।
यार के द्वार को बैकुंठ कहा करते हैं ॥
उसको जो गायेगा वो यार उसे आयेगा।
यक ज़माने से यही बात सुना करते हैं ॥
देखें किस रोज़ रसाई हो वहां 'राधेश्याम'।
रोज़ तसबीह पै घड़ियों को गिना करते हैं ॥

ग़ज़ल (नं० ४८)

काशी गया में फिर रहा घरकी ख़बर नहीं।
दिलदार अपने घर में है करता नज़र नहीं ॥
समझारहे सुझारहे हैं तुझको कबसे हम।

इन्सान या पत्थर है तू अबतक असर नहीं ॥
हर बर्गो बर में हर के ही जौहर नुमायां हैं।
वो कौन सी जा है वो जहां जल्वागर नहीं ॥
पर्दा-नशीं को पर्दे में गर देखना मंजूर।
पर्दा उठादे आंख का फिर दरबदर नहीं ॥
अपने में आप जान ही लेगा तू "राधेश्याम"।
यह वोही शान्तिपद है जहां कुछ खबर नहीं ॥

नाटक की लय (नं० ४९)

("दिले नार्दा को हम समझाये जायेंगे" इसकी तर्जपर)

तुझे जलवा हम उसका दिखाये जायेंगे। सतगुरु बानी तूने सुनी है, तुझे अपने में अपना मिलाये जायेंगे ॥

शेर—मैना मैं ना कहे सो सबके मनको भाती है।
'मैं' 'मैं' बकरी कहे सो खुद गला कटवाती है ॥
बस यही मैं तेरी रस्ता तेरा भुलाती है।
यह ही मैं अन्त को अन्धा तुझे बनाती है ॥
'मैं' है क्या चीज़ यह सोचेने 'मैं' मिटजाती है।
तेरी पोशिश "राधेश्याम" धोकर रंगाये जायेंगे ॥

लावनी (नं ५०)

जिसको खुद की है खबर नहीं वो खुदा को क्या समझायेगा।
जो अन्धा चारो नैन से है वो दर्शन कैसे पाये गा ॥
जिसने न सन्त सतसंग किया वो आत्मतत्व क्या पहिचाने।
संसकार जिसके श्रेष्ठ नहीं वो धर्म. विषय कैसे जाने ॥
जो नार पिया से जाय मिली गुड़ियों का खेल वो क्या ठाने।
जो अपने घर पर पहुंच गया वो तीर्थयात्रा क्या माने ॥
जिसका मन है मैलों से भरा वो हरि गुण कैसे गायेगा।
जो अन्धा चारो नैन से है० ॥ १ ॥

जो नशेबाज़ बकबादी है क्या ठीक है उसकी बातों का ।
जहां उदार बुद्धीवान नहीं क्या काम वहां गुणवानों का ॥
दीनों को सताया जाय जहां क्या ठीक वहां पर पापों का ।
जो दुनियां से मुंह मोड़ चुका क्या पता है उसके कामोंका ॥
जिसमें नदान और ज्ञान ध्यान वो कहां से शुभफल लायेगा ।
जो अन्धा चारो नैन से है० ॥ २ ॥

जो बगुला भगत बना फिरता वो सत्य बात क्या बतलावे ।
जिसने न तजुर्बा आप किया वो औरों को क्या समझावे ॥
आरूढ़ सदा जो सत्य पै है वो कहीं ख़ौफ़ क्यों कर खावे ।
जो जानता है नहीं क़द्र रहै वो रोज़ किसीके क्यों जावे ॥
जो फ़िज़ूलख़र्ची करता है जागीरें वो क्या रखायेगा ।
जो अन्धा चारो नैन से है० ॥ ३ ॥

आपुसमें बैर वो क्यों रक्खे जो बुद्धिवान कहलाता है ।
उसको डर और लज्जा कैसी जो पर उपकार कराता है ॥
वो करै ख़ुशामद क्यों जगकी जिसका ईश्वर अनदाता है ।
जो कहा बड़ों का माने नहीं उसको शऊर कब आता है ॥
जो इष्ट न रक्खै 'राधेश्याम' वो कैसे काव्य बनायेगा ।
जो अन्धा चारों आंख से है० ॥ ४ ॥

गाना (नं० ५१)

सुन नर अज्ञानी, नाहक जनम धरायो ।
मति क्यों बौरानी, अनरथ रोज़ कमायो ॥

बाबा दादा मित्र नित, मरते जाये अनेक ।
अपनी आंखो देखके, उपजै नहीं बिवेक ॥

अरे मूरख अभिमानी, धन बलमें इतरायो ॥

यक यक करके आखिरी, बीती जावे स्वांस ।
परिवारी नारी तेरे, नोच रहे हैं मांस ॥

तुझे सूझै नहीं हानी, धूरिमें समय गंवायो ॥

सपने में अपना भयो, तपता है दिनरात ।
जपना छोड़ा नामका, भूलगया सब बात ॥

अरे वारे सैलानी, सत्यानाश करायो ॥
कात कमाई दिन गयो, रातमें कामगुलाम।
नाम न लीनो रामको, गावै "राधेश्याम" ॥
करी अपनी मनमानी, नाना स्वांग दिखायो॥

गज़ल सोहिनी (नं० ५२)

हाय ! आसार बुढ़ापे के हुये जाते हैं।
और हम धूपकी मानिंद ढले जाते हैं ॥
स्याह बालोंकी अँधेरी में थे हमभी अन्धे।
ख्वाबमें भी न यह सोचा कि लुटे जातेहैं ॥
चांदनी आने लगी कहतीहै दिल साफ़ करो।
वरना पड़ता है ग्रहण चन्द्र ढके जाते हैं ॥
हाय यह सुनके भी कुछहै न ख्याले उक़बा।
रोज़ बढ़ते हुये सालों को गिने जाते हैं ॥
शर्म तो यहहै कि सब जानके अनजान हुये।
और आखिर उसी दौलतपै मरे जाते हैं ॥
सुनिये जगदीश प्रभू दीनहुआ 'राधेश्याम'।
अबतो सब हौसले और ज़ोर थके जातेहैं ॥

गज़ल (सारङ्ग) (नं० ५३)

झूठ जो चीज़ है फिर उससे मुहब्बत कैसी।
खाक होजाय जो दमभर में वो सूरत कैसी ॥
रंग बदल जाय जो कुछ दिनमें वो हालत कैसी।
जिन गुलोंपर हो खिज़ां उनकी वो रंगत कैसी ॥
जो डुबोदे तुम्हें मझधार वो सुहबत कैसी।
नर्क लेजाये जो इन्सांको वो दौलत कैसी ॥
चीज़ अपनी अगर छिनजाय तो कुव्वत कैसी।
आखिरी वक्त में दूरी हो वो कुरबत कैसी ॥
जिसके परदे में मुसीबत हो वो राहत कैसी।

अपने हाथों ही दिया फूंक तो उलफ़त कैसी ॥
दिल में परहेज़ की बू है तो इताअत कैसी ।
दिल कहीं और फँसा है तो इबादत कैसी ॥
मेरा तेरा यह बखेड़ा है कहे 'राधेश्याम'
मौत जब सरपै खड़ी है तो सकूनत कैसी ॥

लावनी (नं० ५४)

"फ़क़ीर" के सब मानी लिखगये हैं एक बड़े उसताद ।
'फ़े'से 'फ़ाक़ा' 'क़ाफ़' से क़ाबू 'रे' से रहिम 'इये' से याद ॥
फ़क़ीर में पहिले "फ़े" आई जिससे फ़ाक़ा बनता है ।
पहिली मंज़िल कितनी मुश्किल जिससे होश बिगड़ता है ॥
बाक़ी बातें तब होती हैं जब के पेट यह भरता है ।
भूखे पर अकसर यह देखा ज्ञान ध्यान सब नसता है ॥
इसीलिये 'साधना' चाहिये रहै भूख पर भी दिलशाद ।
'फ़े' से फ़ाक़ा० ॥ १ ॥
आगे "क़ाफ़" से क़ाबू निकला जिसे ख़ूब बांधाजावे ।
यानी दश इन्द्री और मनको ठीक तरह रोका जावे ॥
कारण, इन्द्री द्वारा जगमें चञ्चल चित्त चला जावे ।
ज्ञान ध्यान मट्टीमें मिलाकर दोनो जहांसे गिराजावे ॥
इसी लिये इन्द्री और मनकी ख्वाहिश को करदे बरबाद ।
"फ़े" से फ़ाक़ा "क़ाफ़" से क़ाबू० ॥ २ ॥
अब "रे" से बनता है रहिम सो उसकाभी यूं सुनो मरम ।
रहिम मिलाता है 'रहीम' से रहिम फ़क़ीरोंका है धरम ॥
सन्सारी पर रहिम किया और बतादिया गर उसका करम ।
अपना भी आनन्द बढ़ा और उसकाभी मिटगया भरम ।
इसीलिये वाजिब फ़क़ीर को करें ग़रीबोंकी 'इमदाद' ।
'फ़े' से फ़ाक़ा 'क़ाफ़' से क़ाबू 'रे' से रहिम० ॥ ३ ॥
अब है 'इये' से 'याद इलाही' हर यक जिसे समझताहै ।
जिसके लिये छोड़ दुनियांको भेष फ़क़ीरी धरता है ॥

जिसके करते करते कुछ दिन आपमें आप पहुंचता है।
याद के पूरे होते ही संसार का बन्धन कटता है॥
'राधेश्याम' फ़क़ीर वोही जिसमें हों यह 'चारों' आबाद।
'फे' से फ़ाका 'क़ाफ़' से क़ाबू 'रे' से राहिम 'इये' से याद॥

छोटी बहर (नं० ५५)

("चलेसियराम लखन बनको" इसी की तर्ज़पर गाओ)

मज़ा जो पाया फ़क़ीरी में। न देखा कभी अमीरीमें॥
दुनियां हमने छानली, हुये बहुत कुछख्वार।
मुँह देखे का प्यार है, सब मतलब के यार॥
ख्याल आवगा पीरी में। न देखा कभी अमीरी में॥
धनवालोंके पास है, धन दौलत और गाम।
मस्तानों के पास है, बाबा उसका नाम॥
असर जो इस अकसीरीमें। न देखा कभी अमीरी में॥
किसके बेटा और बहू, किसके भाई बन्द।
मस्त उसीकी यादमें, करैं सदा आनन्द॥
हज़ारों मरे जगीरी में। न देखा कभी अमीरी में॥
अपने में भूला फिरे, अपनेमें है आप।
"राधेश्याम" विचारले, ना कोई माई बाप॥
लुत्फ शाही न वज़ीरी में। न देखा कभी अमीरी में॥

ग़ज़ल (नं० ५६)

सच्चा आशिक़ है जो वो ज़ेरो ज़बर क्या जाने।
मस्त दीवाना भला ताजो सिपर क्या जाने॥
जिसको अभिमान है वो इल्मो हुनर क्या जाने।
जोके बे इल्म है वो गुण की क़दर क्या जाने॥
दुनियवी शख्स समाधी की नज़र क्या जाने।
हक़ पै पहुँचा हुआ दुनियांकी ख़बर क्या जाने॥

फूटी क़िस्मत का समुन्दर में गुहर क्या जाने।
इश्क़ दीवाना भला जल औ लहर क्या जाने॥
जो समझ आये उसे कहते चलो"राधेश्याम"।
उसकी क़ुदरतके तमाशे को बशर क्या जाने॥

रागदेश (नं० ५७)

यह अरजुनने श्रीकृष्ण से पूँछा यक दिन।
महाराज बतलाओ मुक्ती का साधन॥
सुनाओ सविस्तार मुझको जनार्दन।
मेरे रूप का मुझको दिखलाओ दर्शन॥
यह सुनते ही श्री द्वारकानाथ बोले।
प्रकृती परिच्छेद के भेद खोले॥ १॥
सुनो यार कहता हूँ जो कुछ लखा है।
बनाई नहीं यह पुरानी कथा है॥
ज़रा ज्ञान से देखो संसार क्या है।
यह नटरूप आत्मा ने नाटक रचा है॥
नहीं दूसरी बस्तु इसमें मिली है।
वो दृश्य और द्रष्टा और दर्शन खुद ही है॥ २॥
जगत् जिसको कहते हैं वोही मया है।
यह दश इन्द्रियों पञ्चतत्वों रचा है॥
हरएक शैके अन्दर वोही बस खिला है।
है सब से जुदा और सब में मिला है॥
वोही चाँद सूरज सितारा वोही है।
तमाशाई वो है तमाशा वोही है॥ ३॥
सुनो जैसे मट्टीमें बरतन बने हैं।
और रूप उनके नाना तरहके रचे हैं॥
जो अज्ञानी हैं वो तो यह जानते हैं।
यह प्याले हैं मटके हैं और यह घड़े हैं॥
जो ज्ञानी हैं वो तत्वको पेखते हैं।

वो मट्टीही मट्टीमें सब देखते हैं ॥ ४ ॥
इसी भांति सन्सार को सोचियेगा।
चराचर को सम दृष्टि से देखियेगा॥
खुदी को अहंकार को मारियेगा।
है ब्रह्माण्ड सब ब्रह्ममय जानियेगा॥
सुनाई यह सन्सारकी सब कथा है।
जिसे जीव कहते हैं देखो वो क्या है ॥ ५ ॥
ज़रा सोचिये जैसे जल और लहर है।
फिर और जैसे सोने मे जानो ज़ेवर है॥
या लड्डू में जैसे सरासर शकर है।
फ़क़त इतना ही ब्रह्म जीवान्तर है॥
वो है ब्रह्मका अंश समझो यह असला।
ज़रा सा है दरम्यान में एक परदा ॥ ६ ॥
जो सन्सार के चक्र में फँसगया है।
मनीराम ने जिसको धोकादिया है॥
जो अपने को यह देह ही मानता है।
निजानंद रूप अपना भूला हुआ है॥
वोही जीव है यार बन्दा वोही है।
सो मदहोश आंखों का अन्धा वोही है ॥ ७ ॥
जब आंखों से उसको दिखाई पड़ेगा।
जब अपने सुखी देशको वो लखेगा॥
जब अपने से अपना वो आकर मिलेगा।
तभी जीव यह नाम उसका छुटेगा॥
वो सन्सार यह जीव और ईश गाया।
मगर यहभी त्रिपुटी सो मायामें पाया ॥ ८ ॥
जो है ब्रह्म बस आत्मानन्द है वो।
अजर है अमर है चिदानन्द है वो॥
प्रकाशक प्रभासक सदानन्द है वो।
अचल है अटल है निजानन्द है वो॥

है सर्वकाल सर्वत्र चरचा उसी का।
यह जल्वा उसीका उसीका उसीका ॥ ९ ॥
यहां मैं न तू और न यह और न वो है।
यह सन्सार और जीव और ईश सो है॥
उलट दो जो घूंघट तो देखो वो को है।
पृथक नाम से रूप से वो है जो है॥
यूं देखो तो अपने से अपना जुदे हैं।
यूं देखो तो अपने में अपना मिले हैं॥ १० ॥
पर उपकार में अपना तन मन लगाओ।
दया रक्खो दुखियों को मत तुम दुखाओ॥
करो धर्म के कर्म हरि गुण को गाओ।
वृथा मान अपमान से मन हटाओ॥
किसी की बुराई का मत ढंग करना।
सदा प्रेमसे सन्त सतसंग करना॥ ११ ॥
पकड़ योग बल प्राण धारा को जाओ।
चलो ऊर्ध्व सोहं सुनाओ सुनाओ॥
भृकुटि मध्य आंखों का तारा चढ़ाओ।
वहां "राधेश्याम" ध्यान अपना जमाओ॥
तभी जान लोगे तुही है तुही है।
मेरे यार मुक्ती का साधन यही है॥ १२ ॥

राग भैरों (नं० ५८)

बतलाओ क्या पेट का भरना ही कर्त्तव्य कहाता है।
पेट अगर देखिये तो कूकर काकका भी भरजाता है॥
चाहे रोज़ करोड़ों आवें चाहे पैसे रोज़ मिलें।
आधासेर अन्न से ज्यादा पेट नहीं कुछ पाता है॥
ख़सकी टट्टी के कमरे में सोने वाला क्या जाने।
बाहर पंखा खींचने वाला जो तकलीफ़ उठाता है॥
बन्द पालगाड़ी में जाने वाला उसकी क्या जाने।

मीलों भुनती लूहों में पीछे जो दौड़ा आता है ॥
कहो कहो कुछ ध्यान भी उसकी तकलीफोंका लाते हो।
आंधी पानी में जो पेड़के नीचे रातबिताता है ॥
एक मसहरी पर मौजों में एक कङ्कड़ों पर सोवै।
एक चलै हाथी पर सजकर एक खड़ा चिल्लाता है ॥
एक बाप के दो बेटे हैं क्या नंगा और क्या सरदार।
हाथ आंख खाना सोना सब एक ही सा दरसाता है ॥
जन्में एकी तरह से दोनों बड़े भी एकी तरह हुये।
एकी तरह चिता में दोनों का शरीर जलजाता है ॥
इस समदृष्टी के गानेको समझ देख ए 'राधेश्याम'
क्यों अभिमान में मतवाला हो दिलदीनों का दुखाता है ॥

भजन रेलगाड़ी (नं० ५६)

कैसा बना कुदरती खेल । अद्भुत काया की है रेल ॥
मनका अंजन, बुद्धी ड्राइवर, पटरी दश इन्द्री हैं।
जीव गार्ड है, स्वांसतार है, तीनों गुण घण्टी हैं ॥
आते जाते नहीं झमेल । अद्भुत काया की है रेल ॥ १ ॥
अप और डाउन नाम रूपका, बनीहै जङ्क्शनबिलडिङ्ग।
जाग्रत स्वप्न सुषुप्ती तुर्या, यह स्टेशन चेकिङ्ग ॥
ठहिरै यहां ज्ञानकी मेल। अद्भुत कायाकी है रेल॥ २ ॥
हैं संकल्प विकल्प नये जो, वोही सब पैसेन्जर।
विचार का सिगनल डाउन है, बलका लाइन किलियर॥
होती भाव की सौदा सेल। अद्भुत काया की है रेल॥ ३ ॥
संसकारकी चैन लगी है, जिसमें गाड़ी रुकती।
कर्म लगेज करानेपर, फलकी बिल्टी है मिलती॥
लगी जन्मान्तर की स्केल। अद्भुत कायाकी है रेल॥ ४ ॥
कर्म उपासन ज्ञान टिकटघर, सतसंग का फेअर है।
सतगुरु रूपी यार यहां, ट्राविलिंग टिकटचैकर है ॥
विद आउट होजाते हैं फेल, अद्भुतकाया की है रेल॥ ५ ॥
ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र, जो चारों वर्ण कहावें।

फ़र्स्ट सेकेन्ड थर्ड और इन्टर, दर्जे यही सुहावें ॥
तोड़ें रूल वो जावें जेल । अद्भुत काया की है रेल ॥ ६ ॥
पाप पुण्य का बण्डल रखकर, राहगीर सोजावें ।
चोर रागद्वेषादिक लूटें, सन्त सिपाही बचावें ॥
जगते रहो न सोओ वेल । अद्भुत काया की है रेल ॥ ७ ॥
खा खा बासना रूपी कोयला, भर्मके धुयें उड़ाती ।
आज पार आनन्द नगर को, रेल हमारी जाती ॥
करैं नित 'राधेश्याम' किलेल । अद्भुत कायाकी है रेल ॥ ८ ॥

राग भैरो (नं० ६०)

अब जाग मुसाफिर जागज़रा, आलस्य अविद्या त्याग ज़रा ।
वो देख सुबहका वक्त हुआ, किरनों ने अंधेरा नसायदिया ॥
इसवाक्यपै तूने न ध्यान किया, जो सोया सो खोयाजगासोजिया
अबभी न सुना तो यहींपैरहा, वहां कूंच नगाड़ा बजाय दिया ॥
सर पै सफ़र ! तुझको ख़बर है !! कैसा बशर है !!!
करले सब अपना काम, रखले अण्टी में दाम,
भजले ईश्वर का नाम, समझावै 'राधेश्याम'
तुझे सूझे सोकर हमने गायदिया ॥

नाटक की लय (नं० ६१)

("दिल नादां को हम समझाये जायेंगे" इसकी तर्ज़पर)

बुरी बातैं तुम्हारी छुड़ाये जायेंगे-हम तो अय 'राधेश्याम'
हमेशा—चाहे मानो न मानो जताये जायेंगे ॥
शेर-मयख्वार को करैगी यह मय ख्वार एक दिन ।
इस जाम का अंजाम हो अज़हार एक दिन ॥
प्याला तुम्हें पीला करै अययार एक दिन ।
शीशी से आधाशीशी करै ज़ार एक दिन ॥
भट्टी की तरह फूटैगा आज़ार एक दिन ।
हश्यू है ! हश्यू है !! हश्यू है !!! सुनाये जायेंगे ॥

नाटक की लय (नं० ६२)

("यारब यह क्या हुआ" इसकी तर्जपर गाओ-)

जिसने हरी भजा, जिसने हरी भजा।
सन्सार के समुद्र से वो पार होगया ॥ १ ॥
इस वास्ते श्रोतागणो मिल जुल के आज आउ।
जगदीश को रिझाउ उसी के गुणों को गाउ ॥
तब पार हो बेड़ा, तब पार हो बेड़ा।
जब राग से वैराग हो अनुराग हो हरका ॥ २ ॥
धन धाम गाम बाम चाम फील और शुतर।
बागो बगीचा बाप मात भ्रात तात ज़र ॥
कुछ संग न जायेगा, कुछ संग न जायेगा।
जिस दिन कराल व्यालसा वो काल आयेगा ॥ ३ ॥
है बन्दगीसे ज़िन्दगी यह खूब समझलो।
अभिमान धनका मत करो भगवानसे डरो ॥
सबका करो भला, सबका करो भला।
दीनोंका भूलकरभी, न काटो कभी गला ॥ ४ ॥
बस राधेश्याम आठों याम हरका नाम जप।
क्यों भूल रहा फूल क्या हुसूल छोड़गप ॥
मत धूल अब उड़ा, मत धूल अब उड़ा।
कर धर्म जान मर्म न खो शर्म बेहया ॥ ५ ॥

भजन (नं० ६३)

हैं झूठे धाम गाम बाम।
ऐसी देह फिर न मिले भज हरीका नाम।
जागो जागो मोह त्यागो अब न रही शाम ॥
सोते सोते उम्र बीती जाग 'राधेश्याम'

नाटकमें (नं० ६४)

("प्यारे परदेसिया न जाओ साजना" के वजन पर)

गारे हरके गुन गा मेरे मना। नहीं कोई तेरा जगमें चीन, स्वारथ के नाता (तान)। तेरा कल्यान, तेरा कल्यान, गारे हरिगुण तज अभिमान। 'राधेश्याम' नाम नौका चढ़के हो भवपार।

दादरा (नं० ६५)

("तेरी मखियाँ दुपहिरी में कहाँ गई थी" इसके तर्ज़पर)

करो हरिकीर्तन आज सब खासो आम ॥
झूठे हैं धाम गाम बामा ललाम।
झूठे हैं ठाम दाम दमड़ी छदाम ॥ करो० ॥
आवेगा चलने का जिस दिन पयाम।
रहिजांय सारे यहीं तामजाम ॥ करो० ॥
ढलता है दिन यार होती है शाम।
मानो कलाम तभी होवे अराम ॥ करो० ॥
जिसका मुकाम हर शै में मुदाम।
छाया तमाम में जो आठों याम ॥ करो० ॥
उसके गुलाम बनो पूरे हों काम।
करके प्रणाम यह कहै राधेश्याम ॥ करो० ॥

नाटक में (नं० ६६)

("दिन पाया बहार का" इसकी तर्ज़पर)

समय है चल चलाउका खुर्दो कलां कहो हरीनाम
कहो हरीनाम ! हरीनाम !! हरीनाम !!! हो—
उत्तम यह नर तन होवे मुबारक ! करलो जो करना है शुभकाम।
खुर्दोकलां कहो हरीनाम। कहो हरीनाम ! हरीनाम !! हरीनाम !!!
जोड़ा मर्दां शुभ शब्द और सुरत का। गावै पुकारकर 'राधेश्याम' ॥
खुर्दोकलां कहो हरीनाम। कहो हरीनाम ! हरीनाम !! हरीनाम !!!

नाटक की लय (नं० ६७)

('मालिन वनलागी नसीम बहार" इसके वज़न पर)

सुजन मिल कीजै तनी रे विचार। है सार।
हरदम हरपल नाम ओंकार॥
दो तज अब रार, हो सब में प्यार, सुधार॥
मिला आज शुभतन, सब कहो धन धन, बिनती है भगवन, शुभगति हो। सभी मिलकर, गान सुरमे हरिके गुणोंका करो अब प्रचार। सब पियो अमरका जाम, धन्यवा. राधेश्याम।
जयहो जयहो जयहो—यार॥

ग़ज़ल जल्सेकी मुबारकबाद (नं० ६८)

आज का वक्त सुहानाभी सदा शुभ होवे।
सज्जनों का यहां आनाभी सदा शुभ होवे॥
ज्ञान के भानुने हम सब का अंधेरा खोया।
ऐसा सतसंग रचाना भी सदा शुभ होवे॥
धन्य हैं भाग हमारे हुआ यह गान सुफल।
सज्जनों का दरस पाना भी सदा शुभ होवे॥
सारे भाई रहें खुश दिलसे दुआ देते हम।
सुनना सुनवाना सुनाना भी सदा शुभ होवे
जल्द ऐसा ही कोई दूसरा मौक़ा आये।
और फिर हमको बुलाना भी सदा शुभ होवे॥
ऐसे आनंद में खुश होके कहो 'राधेश्याम'।
जलसे में गाना बजानाभी सदा शुभ होवे॥

भजन (नं० ६९)

हरमें हरको हरदम गायो।
जीव ब्रह्मकी गांठ छुटनही मोर तोर बिलगायो।
जगताडम्बर कछु नहि भासो एक चैतन्य दिखायो॥

उदय ज्ञान को भानु भयो तब सब अज्ञान नसायो ॥
पायो निज स्वरूप अविचल गति शुचि सुबोध दरसायो ।
'राधेश्याम' कृपा सतगुरु से अपन आप अपनायो ॥

भजन (नं ७०)

मेरा स्थल अचल अविनाशी है ।
जहां न मन बुधि चित हंकार है अमल अभेद प्रकाशी है ।
आन जान नहीं रहन गवन है रूप न जन्म न नाशी है ॥
पुण्य न पाप न देह न कर्म है वही हमारी काशी है ।
बना न नेक न बननहार है परंधाम पन वाशी है ॥
राधेश्याम सुरत की डोरी शब्द में जाय हुलाशी है ।

लावनी (नं० ७१)

नकाब उठते ही ख्याल आया सकल नजारा हमींमें है ।
विचार आतेही हमने देखा हमारा प्यारा हमीं में है ॥
हमीं कमल हैं हमीं सुगन्धी हमीं भंवर हैं मस्ताने ।
हमीं हैं महफ़िल हमीं शमा हैं हमीं हुये हैं परवाने ॥
हमीं दृश्य हैं हमी हैं द्रष्टा हमीं हैं दर्शन दीवाने ।
हमीं ब्रह्म हैं हमीं जीव हैं हमीं हैं माया लिपटाने ॥
सचर अचरमय भुवन विपनमय ब्रह्माण्ड सारा हमींमें है ।
बिचार आतेही हमनेदेखा० ॥ १ ॥
हमीं गगन हैं हमीं तो घन हैं हमीं हैं चातक मतवाले ।
हमीं चकोरी हमीं चन्द्र हैं हमीं हैं शीतल उजियाले ॥
हमीं मीन हैं हमीं जाल हैं हमीं हैं दरिया और नाले ।
हमीं इश्क़ हैं हमीं सनम हैं हमीं हैं उश्शाक़ आहवाले ॥

शबो रोज़ माहो साल सूरज कमर सितारा हमीं में है।
विचार आतेही हमने देखा० ॥ २ ॥

हमीं हैं गुलशन हमीं बागबां शजर हमीं गुल हमीं तो हैं।
हमीं सर्व हैं हमीं हैं कुमरी ज़बाने बुलबुल हमीं तो हैं॥
हमीं हलाहल हमीं शीर जल पिये जामे मुल हमीं तो हैं।
खार औ गुंचा जारो शादमाँ शाहो गदा कुल हमींतो हैं॥
जुदाई इकताई प्यार हसरत सब आशकारा हमींमें है।
विचार आतेही हमने देखा० ॥ ३ ॥

हमीं गजल हैं हमीं मुसन्निफ़ हमींने अपनेही में सुना है।
हमीं हैं श्रोता हमीं हैं वक्ता हमीं लिखा है हमीं पढ़ा है॥
अब अन्तमें आगईयह नौबत "हमीं" का फ़िकराभी मिटगयाहै।
जोसारहै अब न नाम हैकुछ वो आपमें आप खिलरहाहै॥
कृपा हुई 'राधेश्याम' गुरूकी तभी निहारा हमीं में है।
विचार आतेही हमने देखा० ॥ ४ ॥

ग़ज़ल (नं० ७२)

उठाना यार रूखपरसे नक़ाब आहस्ता आहस्ता।
रवाना होनेवाला है हिजाब आहस्ता आहस्ता॥
कहा जब मैंने ऐ साहब जुदाई अब नहीं अच्छी।
लगेवो मुझसे फरमाने जनाब आहस्ता आहस्ता॥
उदूका खौफथा बाकी इसीसे यह मला ठहरी।
सवालआहस्ताआहस्ताजवाबआहस्ताआहस्ता॥
निगाहें चार होतेही मुहब्बत आगई दिलमें
खुलेगीहसरतो ग़मकी किताब आहस्ता आहस्ता॥
मिटा जातीहै रंगत दीनओ दुनियांकी 'राधेश्याम'।
घुलाजाताहै आंखोंमें शबाब आहस्ता आहस्ता॥

गाना (नं० ७३)

तेरा बन्दा दीवाना तेरे लिये ।

तेराही मन है तेरीही धुन है यह तेराही गाना तेरे लिये ।
द्वैतकी गहिरी नींद चढ़ीहै नहीं मुशकिल जगाना तेरे लिये ॥
बन्दातो बन्दाहै इसका जि़करक्या कुल चाहै ज़माना तेरेलिये ।
तेराही "राधेश्याम" दासहै सब गाना बजाना तेरे लिये ॥

इति ।

हमारी और पुस्तकें